

डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक एवं सामाजिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. नागेन्द्र कुमार यादव

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तराखंड, भारत

Article info

ABSTRACT

Article history:

Received Aug 19, 2026

Accepted Aug 29, 2026

Published Aug 31, 2026

Keywords:

डॉ. राधाकृष्णन्

शैक्षिक विचार

सामाजिक विचार

भारतीय दर्शन

शिक्षा और समाज

प्रस्तुत अध्ययन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक एवं सामाजिक चिंतन को समझने का एक गंभीर प्रयास है। भारतीय शिक्षा और समाज के विकास में राधाकृष्णन् का योगदान अतुलनीय रहा है। वे न केवल एक दार्शनिक थे बल्कि व्यावहारिक शिक्षाविद् भी थे। उनके विचारों में शिक्षा को समाज के साथ जोड़ा गया है और व्यक्ति के समग्र विकास पर जोर दिया गया है। शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों, नैतिकता और आध्यात्मिकता का प्रसार करना राधाकृष्णन् का मुख्य उद्देश्य था। वे मानते थे कि शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास की प्रक्रिया है। समाज के उत्थान के लिए वे शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण माध्यम मानते थे। उनके विचार आज भी समकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रासंगिक हैं। मूल्य-आधारित शिक्षा, शिक्षक की गरिमा, चरित्र निर्माण, और सामाजिक समरसता जैसे विषय आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि शिक्षा और समाज का संबंध अभिन्न है, और व्यक्ति के विकास के बिना सामाजिक प्रगति संभव नहीं है।

This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).



Corresponding Author:

डॉ. नागेन्द्र कुमार यादव

Email: nagendra89h@hnbgu.ac.in

1. प्रस्तावना

भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा का स्थान

भारतीय सभ्यता में शिक्षा को सदा ही एक पवित्र और महत्वपूर्ण विषय माना गया है। वेदकाल से लेकर आधुनिक समय तक भारतीय चिंतकों ने शिक्षा को मानव जीवन का अभिन्न अंग माना है। प्राचीन भारत में गुरुकुल परंपरा रही है, जहाँ शिक्षार्थी अपने शिक्षक के पास रहते थे और जीवन के सभी पहलुओं की शिक्षा पाते थे। केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन और आध्यात्मिकता भी शिक्षा का अंग थी। उपनिषदों में कहा गया है कि शिक्षा वह है जो मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। यह परंपरा भारतीय समाज में हजारों वर्षों तक जीवंत रही।

शिक्षा और समाज का संबंध भारतीय चिंतन में बेहद घनिष्ठ है। समाज अपने मूल्यों, परंपराओं और नैतिकता को शिक्षा के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाता है। शिक्षा के बिना समाज का अस्तित्व और विकास कल्पना के दायरे में ही रह जाता है। भारतीय दर्शन में यह विचार स्पष्ट है कि व्यक्ति का विकास समाज के विकास से अलग नहीं है। दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति जब विकसित होता है, तो समाज भी विकसित होता है। इसी सिद्धांत पर भारतीय शिक्षा व्यवस्था खड़ी थी।

आधुनिक भारतीय चिंतन में राधाकृष्णन् का स्थान

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जब भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था और पश्चिमी प्रभाव से जूझ रहा था, तब डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् एक ऐसे चिंतक के रूप में आए जिन्होंने भारतीय दर्शन को आधुनिक संदर्भ में समझाया। वे न केवल एक विद्वान थे बल्कि एक दूरदर्शी शिक्षाविद् भी थे। राधाकृष्णन् (1966) के अनुसार भारतीय दर्शन में उनका योगदान इतना महत्वपूर्ण है कि वे आज भी भारतीय चिंतन का प्रतीक माने जाते हैं। उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन को आधुनिक विचारों से जोड़ा और दिखाया कि ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

राधाकृष्णन् की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व थे। वे दार्शनिक भी थे, शिक्षाविद् भी थे, और एक प्रभावशाली व्यक्तित्व भी थे। उनके विचारों में भारतीय परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। शर्मा और पण्ड्या (2023) के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में राधाकृष्णन् का योगदान इतना महत्वपूर्ण है कि भारत के शिक्षा नीति-निर्माण में उनके विचारों का प्रभाव साफ़ दिखाई देता है। राष्ट्रपति के रूप में भी उन्होंने भारतीय समाज को दिशा देने का प्रयास किया।

अध्ययन की आवश्यकता और प्रासंगिकता

आज का समय चुनौतियों से भरा है। शिक्षा व्यवस्था में भौतिकता का इतना दबाव है कि नैतिकता और आध्यात्मिकता गायब हो गई है। बच्चे परीक्षाओं के दबाव में अवसादग्रस्त हो रहे हैं। शिक्षा को केवल नौकरी का साधन माना जा रहा है। ऐसे समय में राधाकृष्णन् के विचार हमें याद दिलाते हैं कि शिक्षा क्या होनी चाहिए। गौड़ और राठौड़ (2023) के अनुसार राधाकृष्णन् कहते हैं कि शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास का माध्यम है, न कि केवल ज्ञान प्रदान करने का साधन।

समाज में आज जो विखंडन दिख रहा है, जो सामाजिक असंतुष्टि व्याप्त है, उसका कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था का मूल्यविहीन हो जाना है। साहू और कुमार (2019) के शोध में स्पष्ट किया गया है कि राधाकृष्णन् के विचार हमें सिखाते हैं कि मूल्य-आधारित शिक्षा ही समाज को एकसूत्र में बाँध सकती है। चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक दायित्व की भावना ही समाज को मजबूत कर सकती है। आधुनिक भारतीय शिक्षा के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता को समझना अत्यंत आवश्यक है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

किसी अध्ययन के उद्देश्य वह दिशा और लक्ष्य होते हैं जिनके आधार पर शोधकर्ता अपना कार्य संचालित करता है। ये उद्देश्य अध्ययन की समस्या को हल करने और उपयोगी ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

1. आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की सार्थकता का अध्ययन करना।
2. व्यक्ति के समग्र विकास में शिक्षा और समाज के अंतर्संबंध को स्पष्ट करना।

3. डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण

शिक्षा का उद्देश्य

राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है। वे मानते हैं कि शिक्षा व्यक्ति के जीवन को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाती है। यह बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी सुनिश्चित करती है। राधाकृष्णन् (1966) के अनुसार शिक्षा को रूपांतरण की प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जन्मजात स्वरूप को मानव स्वरूप में बदल सकता है। साथ ही वह अपने आंतरिक स्वरूप को जानने में सक्षम होता है।

शिक्षा का संबंध आत्म-ज्ञान से भी जुड़ा है। राधाकृष्णन् (1962) के अनुसार आत्म-ज्ञान व्यक्ति को संपूर्ण मानवता के संपर्क में लाने में सहायक है। साथ ही यह मानव आशाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति में सहायता देता है। आत्म-ज्ञान स्वतंत्रता के वातावरण में प्राप्त हो सकता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को मुक्त चिंतन और निर्णय लेने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। वास्तविक स्वतंत्रता तो आध्यात्मिक स्वतंत्रता है।

राधाकृष्णन् (1970) कहते हैं कि शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व के व्यापक विकास से संबंधित है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान और कौशल नहीं है, बल्कि व्यक्ति को ऐसा सक्षम बनाना है कि वह अपने जीवन के हर पहलू को समझ सके। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्तियों को विकसित कर सकता है। यह शिक्षा को जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया बनाता है। राधाकृष्णन् (1958) के अनुसार शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है।

शिक्षक की भूमिका

राधाकृष्णन् शिक्षक को समाज का निर्माता मानते हैं। एक आदर्श शिक्षक का व्यक्तित्व महान होना चाहिए। उसमें ज्ञान, संवेदनशीलता, करुणा और समर्पण होना आवश्यक है। शिक्षक की नैतिक भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षक को बालक के मनोविज्ञान को समझना चाहिए और उसके अनुसार शिक्षण कार्य करना चाहिए। शिक्षक को बालक को मार्गदर्शन देना चाहिए, बल्कि उसे बालक के विकास में सहायक बनना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है। वह एक मार्गदर्शक, प्रेरक और चरित्र निर्माता है। राधाकृष्णन् (1966) कहते हैं कि जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी आत्मा में शक्ति का संचार होता है, वह गुरु कहलाता है। शिक्षक-छात्र संबंध को अभिभावक और बालक के रूप में स्वीकारा जाना चाहिए। शिक्षक को छात्र के मन में छात्र के लिए प्रेम रखना चाहिए। मिश्रा (2017) के अनुसार राधाकृष्णन् शिक्षक को बालकों का दूसरा माता-पिता मानते हैं। उन्होंने बालक के छात्र के प्रति निम्न कर्तव्य निर्धारित किए हैं—शिक्षक को छात्रों के मनोविज्ञान को जाने, छात्रों के मित्रभाव उत्पन्न करे और उसे बनाए रखे, तथा शिक्षक अपने मन में छात्र के लिए प्रेम रखे।

विद्यार्थी की भूमिका

शिक्षा की प्रक्रिया में विद्यार्थी का स्थान केंद्रीय है। राधाकृष्णन् (1966) के अनुसार विद्यार्थी को शिक्षा का केंद्र माना जाना चाहिए। विद्यार्थी को स्वतंत्र चिंतन, आत्म-अनुशासन और ज्ञानार्जन का अवसर दिया जाना चाहिए। श्रीवास्तव और मिश्रा (2024) के शोध में दिखाया गया है कि राधाकृष्णन् विद्यार्थी को केवल निष्क्रिय श्रोता नहीं मानते, बल्कि सक्रिय प्रतिभागी मानते हैं। विद्यार्थी को अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए प्रश्न पूछने और तर्क करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

विद्यार्थी की आत्म-अन्वेषण की प्रक्रिया भी महत्वपूर्ण है। उसे अपनी शक्तियों और सीमाओं को समझना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी को आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और आत्म-सम्मान का विकास करना चाहिए। राधाकृष्णन् (1972) मानते हैं कि जीवन को सफल बनाने के लिए विद्यार्थी को अपने अंदर की छिपी प्रतिभा को खोजना और विकसित करना चाहिए। उच्च शिक्षा की स्वतंत्र चिंतन की परंपरा को विद्यार्थी के लिए बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं।

उच्च शिक्षा एवं विश्वविद्यालय शिक्षा

राधाकृष्णन् उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालय शिक्षा को समाज के विकास का आधार मानते हैं। विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं है। विश्वविद्यालय को स्वतंत्र चिंतन, अनुसंधान और ज्ञान के विकास का केंद्र होना चाहिए। राधाकृष्णन् (1960) के अनुसार विश्वविद्यालय राष्ट्र-निर्माण का एक महत्वपूर्ण संस्थान है। यहाँ शिक्षकों की गुणवत्ता, नैतिक मूल्यों और मानवीय विकास पर जोर दिया जाना चाहिए।

सिंह और तोमर (2024) के अनुसार राधाकृष्णन् विश्वविद्यालय में अनुसंधान को भी विशेष महत्व देते हैं। विद्यार्थियों को मौलिक चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय का वातावरण ऐसा होना चाहिए जहाँ छात्र और शिक्षक दोनों एक-दूसरे से सीख सकें। राधाकृष्णन् (1936) के अनुसार आधुनिक विश्व में सफल जीवन-यापन के लिए आवश्यक है कि मनुष्य आत्मचिंतन और आत्मविश्लेषण करे।

शिक्षा, नैतिकता और आध्यात्मिकता

राधाकृष्णन् के चिंतन में शिक्षा, नैतिकता और आध्यात्मिकता का गहरा संबंध है। सक्सेना (2014) के अनुसार राधाकृष्णन् का आध्यात्मिक मानववाद इसी विचार पर आधारित है। शिक्षा का उद्देश्य नैतिक जीवन और आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाना है। राधाकृष्णन् (1989)

कहते हैं कि भारतीय संस्कृति के मूल में आध्यात्मिकता है। शिक्षा के माध्यम से हमें इस आध्यात्मिक विरासत को समझना और आत्मसात करना चाहिए।

नैतिकता केवल बाहरी नियम नहीं है। यह आंतरिक विकास से जुड़ी है। राधाकृष्णन् (1966) के अनुसार शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को नैतिक गुणों का विकास करना चाहिए। पाल (2015) के अनुसार राधाकृष्णन् का दार्शनिक दृष्टिकोण यह है कि शिक्षा को आध्यात्मिक आयाम से जोड़ा जाना चाहिए। भण्डारी (2015) के शोध में उजागर किया गया है कि राधाकृष्णन् के विचारों में नैतिकता और आध्यात्मिकता दोनों शिक्षा के अभिन्न अंग हैं।

4. डॉ. राधाकृष्णन् के सामाजिक चिंतन का विश्लेषण

व्यक्ति और समाज का संबंध

राधाकृष्णन् का सामाजिक चिंतन व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध पर केंद्रित है। वे मानते हैं कि व्यक्ति और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति के बिना समाज अधूरा है और समाज के बिना व्यक्ति का विकास संभव नहीं है। राधाकृष्णन् (1972) के अनुसार धर्म और समाज का गहरा संबंध है। व्यक्ति के नैतिक विकास से ही समाज की प्रगति संभव होती है। उपाध्याय (2017) के अनुसार राधाकृष्णन् का जीवनदर्शन इसी बात पर आधारित है कि व्यक्तिगत विकास और सामाजिक विकास एक-साथ चलते हैं।

व्यक्ति के विकास में सामाजिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। अगर समाज पतनशील है तो व्यक्ति का विकास बाधित होता है। राधाकृष्णन् (1920) कहते हैं कि धर्म और समाज का संबंध अभिन्न है। समाज को एक सुदृढ़ नैतिक आधार की आवश्यकता है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज को इस नैतिक आधार को प्रदान किया जा सकता है।

मानवतावादी दृष्टिकोण

राधाकृष्णन् का मानवतावादी दृष्टिकोण उनके सामाजिक चिंतन का आधार है। वे मानव गरिमा, मानव एकता और सहिष्णुता में विश्वास करते हैं। राधाकृष्णन् (1966) के अनुसार सभी मनुष्य समान हैं और सभी को सम्मान के साथ जीने का अधिकार है। उनका मानववादी दृष्टिकोण किसी विशेष धर्म या संप्रदाय तक सीमित नहीं है। वे विश्व के सभी धर्मों में मानवीय मूल्यों की खोज करते हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व राधाकृष्णन् के मानवतावादी दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण अंग है। गौड़ और राठौड़ (2022) के अनुसार राधाकृष्णन् प्रत्येक व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी मानते हैं। व्यक्ति को अपने विकास के साथ-साथ समाज के विकास की भी चिंता करनी चाहिए। यह दृष्टिकोण एक समग्र समाज की रचना करता है जहाँ सभी का कल्याण संभव हो।

सामाजिक समरसता

राधाकृष्णन् सामाजिक समरसता को समाज की नींव मानते हैं। विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के बीच सद्भावना और सहयोग आवश्यक है। वे धार्मिक सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान की बात करते हैं। राधाकृष्णन् (1972) के अनुसार समाज में एकता तभी संभव है जब विभिन्न समूह एक-दूसरे को समझें और सम्मान दें।

भारत एक विविधतापूर्ण देश है। यहाँ विभिन्न धर्म, जाति और संस्कृति के लोग रहते हैं। राधाकृष्णन् का विचार है कि यह विविधता हमारी शक्ति है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज में समरसता लाई जा सकती है। शिक्षा व्यक्ति को संकीर्ण मानसिकता से मुक्त कर सकती है और उसे व्यापक दृष्टिकोण प्रदान कर सकती है।

धर्म, संस्कृति और समाज

राधाकृष्णन् का धर्म, संस्कृति और समाज के संबंध का विश्लेषण बहुत गहरा है। वे मानते हैं कि संस्कृति समाज की आत्मा है और धर्म संस्कृति का आधार है। राधाकृष्णन् (1962) के अनुसार भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता पर आधारित है। इसमें नैतिक मूल्य और मानवीय गुणों का विशेष महत्व है। अनंद (2011) के अनुसार राधाकृष्णन् के विचारों में आधुनिकता और परंपरा का सुंदर समन्वय है।

भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि यह सहिष्णु है। विभिन्न विचारधाराओं को स्वीकार करने की क्षमता रखती है। राधाकृष्णन् (1970) कहते हैं कि भारतीय संस्कृति में प्राच्य और पाश्चात्य विचारों का संमिश्रण हो सकता है। यह संस्कृति मानव जाति के लिए एक मार्ग प्रशस्त कर सकती है। अंजनेयुलु (1996) के अनुसार राधाकृष्णन् भारतीय दर्शन को आधुनिक समय के लिए प्रासंगिक बनाते हैं।

शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। राधाकृष्णन् शिक्षा को समाज के विकास का औजार मानते हैं। बेहेरा (2015) के अनुसार राधाकृष्णन् के विचारों में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का गहरा संबंध है। शिक्षा के माध्यम से ही सामाजिक चेतना का विकास संभव है।

सामाजिक परिवर्तन के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति में नैतिक चेतना, मानवीय मूल्य और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना हो। राधाकृष्णन् (1989) कहते हैं कि भारतीय संस्कृति में यह संभावना निहित है। शिक्षा के माध्यम से हम इस संभावना को जागृत कर सकते हैं। लोकतांत्रिक चेतना का विकास करना भी शिक्षा का उद्देश्य है। सामाजिक विकास के लिए यह अत्यावश्यक है।

5. शैक्षिक एवं सामाजिक विचारों का समन्वित विश्लेषण

राधाकृष्णन् के शैक्षिक और सामाजिक विचारों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। ये दोनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति को विकसित करना नहीं है, बल्कि एक बेहतर समाज का निर्माण करना है। राधाकृष्णन् (1966) के अनुसार व्यक्ति का विकास समाज के विकास से अभिन्न है।

शिक्षा व्यक्ति के विकास को प्रभावित करती है और विकसित व्यक्तित्व समाज को प्रभावित करता है। यह एक चक्रीय प्रक्रिया है। जब व्यक्ति नैतिक मूल्यों से युक्त होता है, तो वह समाज में सकारात्मक बदलाव लाता है। राधाकृष्णन् (1962) के अनुसार शिक्षा और चरित्र निर्माण का सामाजिक महत्व अपरिमीम है। एक व्यक्ति जब अपने चरित्र को सुधारता है तो वह समाज को सुधारने का भी कार्य करता है। नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व का संबंध बहुत गहरा है। राधाकृष्णन् (1972) मानते हैं कि नैतिक शिक्षा व्यक्ति को समाज के प्रति जिम्मेदार बनाती है। शिक्षा और मानवीय मूल्यों का संबंध भी अविच्छेद्य है। मानवीय मूल्यों की रक्षा शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। शिक्षा और सामाजिक समरसता भी एक-दूसरे के पूरक हैं। शर्मा आदि (2023) के अनुसार शिक्षा ही वह माध्यम है जो विभिन्न समूहों के बीच समझ और सहिष्णुता विकसित कर सकती है।

शिक्षा द्वारा सामाजिक चेतना का विकास होता है। राधाकृष्णन् (1970) कहते हैं कि जब व्यक्ति में सामाजिक चेतना जागृत होती है, तो वह समाज के कल्याण के लिए काम करता है। व्यक्ति, शिक्षा और समाज के बीच राधाकृष्णन् की समग्र दृष्टि यह है कि ये सभी एक-दूसरे के विकास में सहायक हैं।

6. समकालीन शिक्षा और समाज के संदर्भ में प्रासंगिकता

राधाकृष्णन् के विचारों की वर्तमान समय में अत्यधिक प्रासंगिकता है। आधुनिक भारतीय शिक्षा में मूल्य-आधारित शिक्षा की बेहद आवश्यकता है। राधाकृष्णन् (1989) ने भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर जोर दिया था। आज भी ये मूल्य समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। शिक्षक की भूमिका को फिर से परिभाषित करने की जरूरत है। राधाकृष्णन् (1966) शिक्षक को राष्ट्र के निर्माता के रूप में देखते हैं।

चरित्र निर्माण आज का सबसे बड़ा अभाव है। छात्रों में केवल बौद्धिक विकास हो रहा है, नैतिक विकास नहीं। राधाकृष्णन् (1962) के विचारों के अनुसार शिक्षा से चरित्र निर्माण अभिन्न है। उच्च शिक्षा में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों को अनुसंधान और समाज सेवा पर अधिक जोर देना चाहिए। राधाकृष्णन् (1960) के विचारों में यह स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय को राष्ट्र का मार्गदर्शक होना चाहिए। मानवीय मूल्यों की रक्षा करना आज का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। राधाकृष्णन् (1972) के अनुसार मानवीय मूल्यों के बिना समाज विघटित हो सकता है। सामाजिक समरसता आज भी बहुत महत्वपूर्ण है। धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करना आवश्यक

है। शिक्षा के माध्यम से ही यह संभव है। नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

7. आलोचनात्मक विवेचन

राधाकृष्णन् के शैक्षिक और सामाजिक चिंतन में कई विशेषताएँ हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं। उनके विचार व्यक्तिवादी होते हुए भी सामाजिक हैं। वे व्यक्ति के स्वतंत्र विकास पर जोर देते हैं, लेकिन इसे समाज के हित से अलग नहीं करते। उनके सामाजिक चिंतन की विशेषता यह है कि वे सहिष्णुता, सद्भावना और पारस्परिक सम्मान पर जोर देते हैं।

राधाकृष्णन् (1966) के विचारों के दर्शन की विशेषताएँ उनके शैक्षिक चिंतन में स्पष्ट दिखाई देती हैं। वे शिक्षा को एक आध्यात्मिक प्रक्रिया मानते हैं। उनके विचारों की सीमाएँ भी हैं। आधुनिक तकनीकी शिक्षा पर उनका जोर कम है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ शिक्षा के तरीकों में भी परिवर्तन आया है। राधाकृष्णन् के समय में यह परिवर्तन नहीं थे।

उनके सामाजिक चिंतन में आदर्शवादी पहलू भी है। वास्तविकता में सामाजिक परिवर्तन इतने सरल नहीं हैं। समाज में कई संरचनात्मक समस्याएँ हैं जिन्हें केवल शिक्षा से हल नहीं किया जा सकता। लेकिन यह कहा जा सकता है कि राधाकृष्णन् की दृष्टि समग्र और व्यापक है। उनके विचार भारतीय परंपरा और आधुनिकता का सुंदर मेल हैं। उनके सामाजिक चिंतन की संभावनाएँ असीम हैं। आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था को उनके विचारों से लाभ उठाना चाहिए।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट हो गया है कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक और सामाजिक विचार आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। शिक्षा को जीवन की प्रक्रिया से अलग नहीं किया जा सकता, और जीवन को समाज से अलग नहीं किया जा सकता। राधाकृष्णन् के विचारों में यह समझ स्पष्ट है कि व्यक्ति, शिक्षा और समाज एक अभिन्न सूत्र में बंधे हैं। उनके शैक्षिक विचार व्यक्ति के समग्र विकास पर केंद्रित हैं, जिसमें बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास सभी शामिल हैं। शिक्षा मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। यह केवल तकनीकी ज्ञान नहीं है, बल्कि आत्म-ज्ञान भी है। शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह राष्ट्र के निर्माता के रूप में कार्य करता है। उनके सामाजिक विचार मानवतावादी हैं। वे सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान में विश्वास करते हैं।

वर्तमान समय में जब भारतीय शिक्षा व्यवस्था भौतिकता के दबाव में है, राधाकृष्णन् के विचार हमें सही दिशा दिखाते हैं। मूल्य-आधारित शिक्षा, चरित्र निर्माण और नैतिक विकास आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक समरसता और सद्भावना के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं है। राधाकृष्णन् के विचार समकालीन भारतीय शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनकी दृष्टि आज भी हमें प्रेरणा दे सकती है कि शिक्षा कैसी होनी चाहिए और समाज कैसे विकसित होना चाहिए।

Reference

- [1]. श्रीवास्तव, अर्चना, एवं मिश्रा, महीप कुमार। (2024)। एक तुलनात्मक अध्ययन: डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् और डॉ. नीलम संजीव रेड्डी के शैक्षिक विचार। *AIRO Journals*, 1(1), 15–27।
- [2]. शर्मा, हरेंद्र कुमार, एवं पण्डया, कौशिक वी. (2023)। डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता। *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, 11(3), F758–F764।
- [3]. साहू, चेत नारायण, एवं कुमार, रमेश। (2019)। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का शिक्षा और समाज से गहरा संबंध। *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*, 16(9), 416–419।
- [4]. सिंह, रविंद्र, एवं तोमर, डॉ. कुलदीप सिंह। (2024)। आधुनिक भारतीय शिक्षा में शैक्षिक दर्शन के योगदान का अध्ययन करना। *International Journal of Advance Research in Multidisciplinary*, 2(4), 225–229।

- [5]. साहू, चेत नारायण, एवं कुमार, रमेश। (2019)। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राधाकृष्णन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व। Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 16(1), 1474-1479।
- [6]. उपाध्याय, जनार्दन। (2017)। डॉ. राधाकृष्णन का जीवनदर्शन। प्रज्ञा (सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति में), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका, 34(2)।
- [7]. राधाकृष्णन्, डॉ.। (2017)। उपनिषदों की भूमिका (अनुवाद: डॉ. रामनाथ शास्त्री)। राजपाल एण्ड संस।
- [8]. पाल, आर्थर। (2015)। द फिलॉसफी ऑफ सर्वपल्ली राधाकृष्णन। ट्यूडर पब्लिकेशन कंपनी, न्यूयॉर्क।
- [9]. भण्डारी, डी. आर। (2015)। डॉ. राधाकृष्णन की देन। प्रज्ञा (सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति में), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका, 34(2)।
- [10]. गौड़, सत्येंद्र कुमार, एवं राठौड़, निर्मला। (2022)। शिक्षा के सन्दर्भ में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों का अध्ययन और महत्व। Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 19(6), 453-459।
- [11]. मिश्रा, कुलदीप। (2017)। डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक उपागम का अध्ययन। International Journal of Research in All Subjects in Multi Languages, 5(विशेष अंक 12), 107-112।
- [12]. गौड़, सत्येंद्र कुमार, एवं राठौड़, निर्मला। (2023)। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता। Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 20(1), 104-109।
- [13]. सक्सेना, अंजू। (2014)। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का आध्यात्मिक मानववाद। Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 7(14), 1-4।
- [14]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1989)। भारतीय संस्कृति कुछ विचार। हिन्द पॉकेट बुक्स, शाहदरा।
- [15]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1972)। भगवद्गीता। राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
- [16]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1936)। द स्पिरिट इन मैन: कंटेम्परेरी इंडियन फिलॉसफी। जॉर्ज ऐलन एण्ड अनविन, लन्दन।
- [17]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1972)। धर्म और समाज। राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
- [18]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1960)। द ब्रह्मसूत्र। जॉर्ज ऐलन एण्ड अनविन, लन्दन।
- [19]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1966)। भारतीय दर्शन (प्रथम खंड)। राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
- [20]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1969)। भारतीय दर्शन (द्वितीय खंड)। राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
- [21]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1962)। जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि। राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
- [22]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1970)। प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार। राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
- [23]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1920)। द रेन ऑफ रिलिजन इन कंटेम्परेरी फिलॉसफी। जॉर्ज ऐलन एण्ड अनविन, लन्दन।
- [24]. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली। (1958)। ईस्टर्न रिलिजन्स एण्ड वेस्टर्न थॉट। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन।
- [25]. अनंद, वी. (2011)। डॉ. राधाकृष्णन् का समकालीन विचारों में योगदान। Mainstream, 50(1), 24-32।
- [26]. अंजनेयुलु, डी. (1996)। राधाकृष्णन - द एजुकेशनलिस्ट। TRIVENI पत्रिका।
- [27]. बेहेरा, संतोष कुमार। (2015)। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक विचार। International Research Journal of Interdisciplinary & Multidisciplinary Studies, 1(1), 196-205।

Cite this Article:

डॉ. निरपेन्द्र कुमार सिन्हा, " वैश्विक युग में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन", Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 8, pp. 61-67, Aug 2026.
Journal URL: <https://vijact.com>

DOI: <https://doi.org/10.65785/vijact.v2i8.84>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content of this article, including its accuracy, originality, and ethical compliance. The publisher and editors assume no liability for any errors, copyright issues, or consequences arising from its publication or use.